

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । यं ब्रह्म वेदान्त विदो वदन्ति
परं प्रधानं पुरुषं तथाऽन्ये । विश्वोदगतेः कारणमीश्वरं वा
तस्मै नमो विघ्नविनाशनाथ । त्रिशो विस्तारतां यातुकीर्ति-
यांतु दिगन्तरे । आयुर्विपुलतां यातुष्वयैवा जन्मपत्रिका । २।
अद्यो गणेशाय नमस्करोमि, विरंमि
नारायण शक्रेभ्यः ।

इन्द्रादयो देव गणश्च सर्वे
पश्चात् लिखित निर्मलजन्मपत्रिणा

शुभ सम्बत् २०४७ शके
१५१२ तीर्थांगोलघौ वर्षतुः माहा-
नाम् माहत्तमे माहे भाद्रपदमाहे
शुक्ल पक्षे द्वादशश्याम् तिथौ
रविवारसरे दृष्टं फं ३।८ तदुपरि तपोद-
श्चात् तिथौ उत्ता षाढ नक्षत्रे
दृष्टं फं ७।३७ तदुपरि शिवगानक्षत्रे
शेखरगाम योगे २७।२५ वा ७म
शुभे तदुपरि कौलव गाम सृष्टे तद-
दिनं दिन मानम् ६ फं ३१।१८
[तस्मिन्मानम् दृष्टं फं २८।४८
उभयौः दृष्टं सिंह सौम्यान्तिगा-
न्ध्या १६ भोग्यांश्च १४ उभयौः ३०
एतत्समय मासस्य शुभदि दिष्टम्
दृष्टं फं ४०।४० शतम् दृष्टं फं
३३।०३ सर्वशम् दृष्टं फं ६२।४६
स्वस्ति श्री चानेश्वर भगत तस्य
आत्मजः चिह्न श्री गणेश प्रसादः
तस्य गृहे गोद्विज पत्निका
वेदविदित विवादिता चार्मपत्नी
तस्य पक्षिण कुक्कुटः प्रथम
गर्भे प्रथम पुत्रः जाता ।

तद्विधान द्वादशचक्र-
गुणोण शिवगानक्षत्रस्य तृतीये
-चाणे मेष लग्नोदय जन्म
आङ्गल वर्ष मासदि २-५-१९९०
ईश्व १० बडने [रात्रौ] रेव [शिवनाम]
खेलान्न प्रसाद मवा रात्रि-
अस्ति ।

卐

जन्म	राशि	वर्ग	वर्ष	योग	योगिक	राशि	गण	नाडी
भूत	गुरु	वैशाख	जलवार	वामर	भेष	शनि	देव	अव्यय

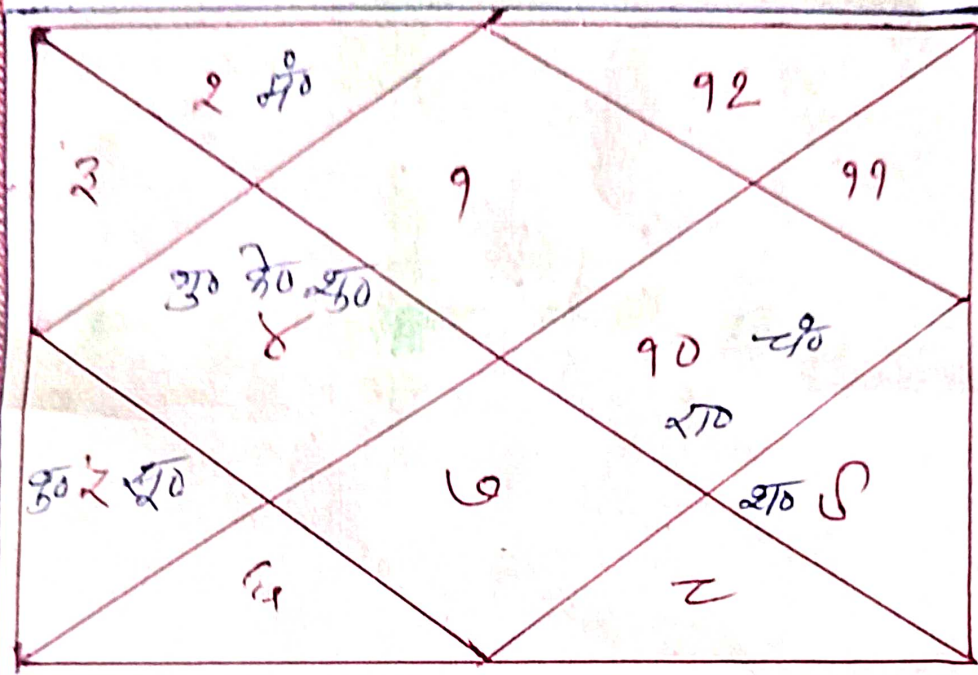
卐

卐

॥ जन्मा कम् ॥

卐

卐



卐

卐

४०	मं	४०	४०	४०	४०	४०	४०
४	१	४	२	३	८	८	३
१०	२	२२	१०	२३	२२	११	११
११	२६	१२	१०	२६	४४	२८	२८
४८	३६	४४	४८	४८	४६	४६	४६
२०	२८	२१	११	१२	१	३	३
२३	४०	३०	२८	४१	२८	११	११

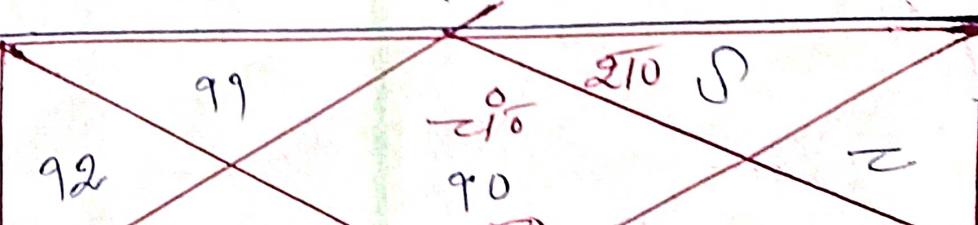
卐

卐

॥ पन्कमा कम् ॥

卐

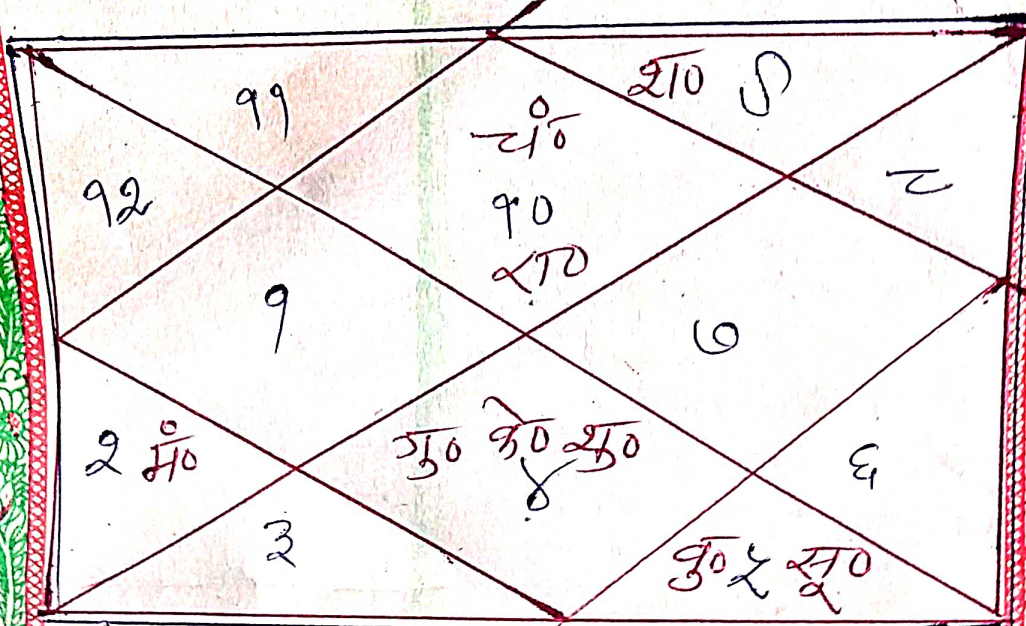
卐



卐

卐

॥ चन्द्रमाङ्गम् ॥



सुभाद्र-नामक में बच्चे का जन्म हुआ है। अतः शुभ कार्य को करने वाला मित्र ओं-शत्रु के काम करने वाला तथा तब वालों को संग्रह करने वाला (ध्याना में मन लगाने वाला) होना है।

इस बच्चे का जन्म पञ्चायत हुआ है अतः तब आदि लोग हमेशा बुद्धि बुद्धि दिगर्भ अतः 90 ताल तक बच्चे को सही से बचाकर आर्यपुत्र हो।

गोल में बच्चे का जन्म होना हुआ है।

है। इत वच्चे का जन्म होना
गोल में हुआ है।

अतः चानी, विद्वान्, उच्च कोटि के
हैं पुण्य राजा मान्य होना है।

इत वच्चे का जन्म
वर्षा भरतु में हुआ है अतः
गुणी, भोणी, राजमान्य, जितेन्द्रिय
चतुर्भुज और अपने पुण्यजन के काल
को काला होना है।

इत वच्चे का जन्म भाद्र
मास में हुआ है। अतः यह
नित्य एक ही पुण्य अधिक
बोझने वाला पुन है पुण्य, पुण्य
कोशल भाषी और सुशील होता
है।

इत वच्चे का जन्म
शुक्ल पक्ष में हुआ है। अतः
दूरी चन्द्र तमान शोभायमान
चक्रवान् उद्योग, अनेक
विषयों को जानने वाला, यदि
कुशल एवं शान्ति होता है।

इत वच्चे का जन्म
महोदशी का हुआ है, अतः
महोदधि, कुल्ल, विद्वान्, शास्त्र
भ्यानी जितेन्द्रिय, योग्यकारी
होता है।

इत वच्चे का जन्म
रविवा का हुआ है अतः पितृ
प्रकृति, धर्म चतुर्, तेजस्वी
पुण्यप्रिय, दानी, और महोदधि
होता है।